

६०३९
Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १७२५
क

Title दश प्रपन्न स्तोत्रम्

Author लङ्केश्वरः

Extent ६ पन्नाः Age

Subject स्तोत्रम्

पूराव
दशमस्तरुनोत्र
नं. १०२५

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ गले कलित १
 कालिमप्रकटते नुभालस्पले ॥
 विनाटित जटोत्करं प्रकटिपाणि
 पाथोरुहे ॥ उदं वितकपालकं
 जगनसे निसन्दर्शित ॥ द्विपाज १

शि
१

नमन्वक्षणे किमपि थामहृन्दा
महे ॥ १ ॥ हृषोपरिपरिस्फुरत्तथव
लथामथामश्रिया ॥ ऊवेरगिरि
गौरिमप्रभवगर्वनिर्वीसनं ॥ क्व
चित्सुनरुमाऊचोपावितऊऊमे

रंकिने॥ राजाजिनविराजिर्नष्ट
जिनभंगबीजंभजे॥२॥ उदित्वर
विलोचनत्रयविस्तृत्वरज्योति
षा॥ कलाकरकलाकरव्यक्तिक
रेणचारुविषो॥ विकासितजटा

शि.
२

टवीविहरणोत्सवप्रोत्सवसत्त॥ न
रामरत्नरंगिनीतरलहूलमीडेम्ह
डम्ह॥ ३॥ विभूषणसरापगाशुवि
तरालवालावली॥ वलद्वलयशी
करप्रकरसेकसंवर्धिता॥ महेश्व

रखरडुमस्फटितसज्जाटामंजरी
नमज्जनफलप्रदातदिहकिंनु
भूयादिमाम्॥५॥ वह्निर्विषयसं
गतिप्रतिनिवर्तितादावले॥ स
माधिकालितात्मनःपशुपतेर्वि

शि.
३

3

शोषात्मनः॥ शिराःसुरसरिज्जटेक
टिलकल्पकल्पजुर्म॥ निशाकर
कलापह्वसविमुच्यमानंभजे॥
त्वदीयसुरवाहिनीविमलवारि
धारावली॥ जटागहनगाहिनी

थ

मतिरियेसमाक्रामत् ॥ तपोत्तम
 सरित्तटेविटपित्ताटवीप्रोल्लसत्
 तमन्विपरिषत्तलाममलमल्लिः
 काभप्रभो ॥ ६ ॥ विहायकमलाल
 याविलसितानुविद्युत्तटी ॥ विडं

शि
ध

वनपट्टनिमेविहराणंविथत्ताम
नः॥कषदिनिजमुद्धतीरमाणवै
डहूडामणो॥कटेजटपुटेभवत्क
रटिचर्मणिब्रह्मणि॥७॥भवन्न
वनदीहलीमुखरदेडदेडाहति.

वृत्तजुटकोटिभिर्मचवदादि
 भिसेव्यते॥ भजेमभवदन्तिकेप्र
 कृतिमेतिपाशाचिकी॥ किमित्प
 परमेपदेप्रमथनाथनाथास्महे
 त्वद्दर्शनपरायणप्रमथकन्यका

य

शि.
थ

ल्लेखित॥ असून सकल दुर्मंकि
मपि शैलमाशा समहे॥ अलेख
लवित्तन्दिका शयित सिद्धसी
मान्निनी॥ प्रकीर्ण समनो मनो
रमण मेरुणा मेरुणा॥ ५॥ न जा

तद्गुर्यात्तमेविषयडुर्विलासे
मनो मनोभवकथास्तमेनच
मनोरथानिष्ठभूः स्फुरत्तरत
रंगिनीतटकुटीरकोटोवसन्
नयेशिवभवानिशेभवभवा

५१

शि.
६

6

निमृजापरः॥१॥ इति श्रीलंके
श्वरविरचितं॥ दशाष्टावस्तोत्रं

